यजुर्वेद

Mrs. Sunita Dhawan
Department of Sanskrit

वैदिक साहित्यविश्व का प्राचीनतम साहित्यहै। वेदों में यजुर्वेद दूसरे स्थान पर है। यजुर्वेद संहिता अध्वर्युपरोहितो का प्राचीनतम ग्रन्थहै। यजुर्वेद की प्राचीन काल में 101 शाखाएं थी। क्योंकि पृथक याज्ञिक कर्मों को करने के लिए अध्वर्यु को अपनीप्रार्थना एवं अपनेस्त्रोतों सेयज्ञ का अनुष्ठान करनापड़ताथा।जिससेधीरे-धीरे यजुर्वेद की शाखाओं का विकासहोता गया।

यजु: शब्द यज् धातुसेबनाहै।

जिसका अर्थहै- यजन, पूजन।यजुर्य- यजते:जिन मन्त्रों सेयज्ञ कियाजाताहै, उन्हेंयजुस् कहतेहै। अनियताक्षरावसानोयजु:यहाँ अक्षरों का अवसानहोनाअनिश्चितनहीं है। ऋक् औरसाम् सेभिन्न गद्यात्मक मंत्रो का अभिधानहीयजु:है।

यजुर्वेद के दो प्रधानवर्गहै- कृष्ण यजुर्वेद औरशुक्ल यजुर्वेद। इनमें से 86 शाखाएं कृष्ण यजुर्वेद की तथा15शुक्ल यजुर्वेद की थी, परन्तु अब हमें यजुर्वेद संहिता की केवलपांच शाखाओं का विशेषप्रचलन देखने को मिलताहै।

तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काण्व, कपिष्ठल, वाजयनेयी।101 शाखाओं का वाङ्मय कितनाविशालहोगा। इसका केवल अनुमानहीलगायाजा सकताहैजैसे कि पहलेबताया गयाहै कि यजुर्वेद के दो वर्गहैं-

1. कृष्णयजुर्वेद 2. शुक्ल यजुर्वेद

1. शुक्ल यजुर्वेद - अत्यधिक पवित्रहोने के कारण इसका यहनाम पड़ा। दूसरा शुक्ल कहने का अर्थयहहै कि इसमें विशुद्ध मंत्रात्मक भाग है। इस वेद में मुख्य रूप से कर्म काण्ड का प्रतिपादन हुआहै। इसकी मंत्र-संहितावाजयेनेयी के नाम सेविख्यातहै।शुक्त यजुर्वेद में केवलयही मंत्र है।जिसका यज्ञ के अवसर पर पुरोहित उच्चारण करतेहैं। उच्चारण करनेवालेपुरोहितों को अध्वर्यु कहतेहैं। इसमें दशपौर्णमास्य, चतुर्मास्य, अग्निहोत्र, सोमयज्ञ, अग्निष्टोम, राजसूय, अश्वमेध, पितृमेध, नरमेध, अन्तयेष्टि आदि यज्ञों का वर्णन उल्लेखनीय है।

इनमें 40 अध्यायहैतथापाश्चान्यविद्वानों की धारणायहहै कि अंतिम 15 अध्यायपरिशिष्टहोने के कारण अवान्तरयुगीय मानेजातेहै।वास्तव में यजुर्वेद के आरम्भ के 25 अध्याय महत्त्वपूर्णहै। इन अध्यायों में विशालयज्ञो की प्रार्थनाओं का संकलन है। आरम्भ के दोनों अध्यायों में दशपौर्णमास्य यज्ञों के अवसरों पर आहुतियाँ प्रदान करने के मंत्रों का विवरणमिलताहै। तृतीय अध्याय में दैनिक अग्निहोत्र के तथा चार्तमास्ययज्ञों के मंत्रों का संग्रह, चौथे अध्यायसेलेकर 8 वें अध्याय तक सोम यज्ञ का वर्णनहै।जिसमें सोम को पत्थरों से कुटकर उसका रसनिकालतेहै, तथा दूध में मिलाकर प्रातः दोपहर व सायंकाल की अग्नि में हवन करतेहै।

सोम यज्ञों की परम्परा में कुछसोम यज्ञ ऐसेहैजो एक दिन में समाप्तहोजातेहै। और कुछ ऐसेहैजो अनेक दिनों में समाप्तहोनेवालेयज्ञों में से प्रमुख है।

वाजसनेयी- सहिता में अग्नि चयन के लिए वेदी निर्माण का वर्णनबड़ेविस्तारसे कियाहै। इसमें सोत्रामणीयज्ञ का भीविधानहै।

यहवहयज्ञहै, जो अपने मूल रूप में योद्धाओं औरराजाओं द्वारा सम्पादित कियाजाताथाराजा के अभिषेक के अवसर पर होनेवालाराजसूययज्ञहै, जिसमें दयूतक्रीडा, अस्त्रक्रीड़ा आदि नानाराजन्योचितक्रियाकलापों का विधानहै। इसी प्रकार के यज्ञों की प्रार्थनाओं का संकलन 11वें तथा 18 वें अध्याय तक अग्निचयनहेतुभिन्न-भिन्नप्रार्थनाओं तथाविविधयाज्ञिक नियमों के अन्तर्गत कियो गयाहै।

अग्निचयन- एक ऐसा उत्सवहोताथाजिसमें अग्नि का चयन निरन्तर एक वर्ष तक उत्सव के रूप में होताथा। इस वेदी की रचना 10800 ईटों से की जातीथीतथा इसकी आकृति पंख फैलाए हुए पक्षी के समानहोतीथी।

19 वें तथा21वें अध्याय तक इस यज्ञ में सोमरस के साथसुरापान का विधानभीपायाजाताहै। कहाजाताहै कि अधिक सुरापान करने इन्द्र रोग से ग्रसितहो गयाजिसकी चिकित्सा अश्विनने इस यज्ञ में की थी।

सौत्रामण्याम् सुराम् पिबेत्।

22वें से25वें अध्याय तक अश्वमेध के विशिष्ट मंत्रों का निर्देश है। अश्वमेधसार्वभौम आधिपत्य के अभिलाषीसम्राट् द्वारा कियाजाताहै।वस्तुत: अश्वमेधयज्ञ को केवलशक्तिशालीराजातथापराक्रमी मनुष्यहीसम्पन्त कर सकताहै।

26वें से 29 वें अध्याय तक ऐसे मंत्रों का संकलन है।जिसमें पूर्व निर्दिष्ट अनुष्ठानों के विषय में नवीन मंत्र दिए गए है।

30 वें अध्याय में पुरुष मेध में तत्कालीनप्रचलितव्यवसायतथा कला कोशल का भी कतिपयपरिचये उपलब्ध होताहै। इसके बाद के अध्यायों में भीप्रसिद्ध, सर्वमेघ के मंत्रों तथाहिरण्यगर्भसूक्त के कतिपय मंत्र का उल्लेख है।

34वें अध्याय के प्रारम्भ में छ: मंत्रों का शिव संकल्प है।

तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु।

वाजसनेयीसंहिता का अंतिम 40 वां अध्याय ईशोपनिषद है।यह अति महत्त्वपूर्ण उपनिषद् है।इस यजुर्वेद की विषयवस्तु की सर्वाङ्गीणताप्रस्तुत करने के लिए कतिमय मंत्र:-

तच्चक्षुर्देवहितम्.....।

मंत्र में सैकड़ोवर्षों तक अविकल इन्द्रियों और दीनता रहितजीवन की कामता की गई है-

यां मेधाम् देवगणा: पितरश्चोपासते।

तया मामध मेधयाह्यग्ने मेधाविनं कुरु।।

इस मंत्र में देवताओं औरपितरौसे मेधावीबुद्धि की याचनाहै।

अभयम् मित्रादभयममित्राद् .....।

इस में अभय जीवन की और संकेतहै। इस मंत्र में विनाश औरनिर्माण इन दोनों को समान महत्व दिया गयाहै।

संभूतिम् च विनाशम् च यस्तद् वेदोभयं सह:

कृष्ण यजुर्वेद- प्राय:शुक्ल और कृष्म में वर्णित अनुष्ठानविधियां प्राय: एक जैसीहीहै। कृष्णयजुर्वेद की आजकल केवल चारशाखाएं उपलब्ध होतीहैं-

1) तैत्तिरीय शाखा
2) मैत्रायणी शाखा
3) कठसंहिता
4) कपिष्ठलकठ शाखा

1) तैत्तिरीय शाखा- तैत्तिरीय शाखा का प्रसार दक्षिणी भारत में है। इस शाखा ने अपनीसंहिता, बाह्मण, आरण्यक, उपनिषद, श्रोतसूत्र, गृहसूत्र को बड़ीतत्परतासे अक्षुण्ण बनाए रखा, यहसंहिता काण्डु, प्रपाठक अनुवाकों में विभक्तहै, इसका विषयशुक्त यजुर्वेद में वर्णितविषयों के समानहै।
2) मैत्रायणी शाखा- यहसंहिता गदय पदयात्मक है, इस सहिता के चार खण्ड है- आदिम काण्डु, मेध्यम काण्ड, उपरि काण्ड और खिल्लय काण्ड। इसमें दर्शपौर्णमास्य, चतुर्मास्य, अग्निहोत्र, राजसूय, अश्वमेध, कामेष्टि आदि का वर्णनहै। इसमें कुछ ऋग्वेदे सेभीली गई।

3) कठ संहिता - पंतञ्जलिभाषा के अनुसार ग्रामे-ग्रामे कलापक, काठकम् च प्रोच्यते। इसके पांच खण्ड हैजिसमें पुरोडाश, अध्व, पशुबन्ध, वाजपेय, अग्निहोत्र, राजसूय, अग्निष्टोम, अग्नि चयन आदि का वर्णनेहै।प्राचीन काल में इस शाखा का अेत्यधिक प्रचारहुआहै।

4) कपिष्ठलकठ शाखा- पाणिनीसूत्रानुसार कपिष्ठलोगात्रे कापिष्ठलनामक ऋषिविशेषहै। इसकी एक ही अधूरी कृति उपलब्ध होतीहै। इसकी कठ संहितासेविभिन्नताहै। ऋग्वेद के समानयह अष्टक और अध्यायों में विभक्तहै। अधूराहोने पर भी उपयोगीहै।

सक्षेप में यह कहाजा सकताहैकि कृष्ण यजुर्वेद की चारों संहिताओं में केवलस्वरूप की ही एकतानहीं बल्कि उसमें वर्णित अनुष्ठानों और मंत्रो में भी अत्याधिक साम्यहै।यहसाम्यस्वाभिक भीहै।

यजुर्वेद का प्रधानविषययज्ञहै, यज्ञानुष्ठान के दवारा, कोई मनुष्यवास्तव में अभ्युदय विरोधीभावनाओं तथाशक्तियों पर विजयप्राप्त करतेहुआ परमपद को प्रोप्त करताहै।

अज्ञानसेप्रकाश की तरफ बढना, मृत्युसे अमरत्व की ओरबढना, आत्मा की निरन्तर उन्नतिही अमरत्वहै।

कर्म करतेहुए हम 100 वर्ष तक जीवितरहे, हमारे सद् विचार एवं उत्तम अभिलाषापूर्णता को प्राप्त करे। इस प्रकार के श्रेष्ठभावों का तथासाथहीसाथविश्वबन्धुत्व की उदात्र भावना का प्रतिपादन यजुर्वेद है।

महत्त्व- यजुर्वेद संहिता में प्राप्तहोनेवालेप्रसंग/भारतीय व पाश्चात्यविद्वानों के लिए भीसाहित्यिक रचना के रूप में अत्यन्त महत्त्वपूर्णप्रतीतहोतेहै।

जोविद्यार्थी केवलभारतीय रुप में हीनहीं, अपितुधर्म के सामान्यविज्ञान के रूप में भी इनका अध्ययन करताहै।वह इसकी विशिष्टतासे अवश्यप्रभावितहोताहै।

यजुर्वेद संहिता के ज्ञान के बिनाहम बाह्मण-ग्रंथों के दार्शनिक तत्व को नहीं समझ सकतेतथाभारतीयसंस्कृति के ज्ञान के बिनाहम भारतीयता का स्वाभिमाननहीं रख सकते। इस प्रकार यजुर्वेद संहिताभारतीयों के प्राचीन कालसेधार्मिक तथा दार्शनिक परम्परा के ज्ञान के लिए आधारशिला कहीजा सकतीहै।

यावत् स्थास्यन्तिगिरय:सरितश्चमहीतले।
तावद् यजुर्वेद-महिमालोकेषुप्रचरिष्यति।।

Thank You